केवल आन्तरिक वितरण हेतु

परिसर समाचार

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर–263145, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

वर्ष : 3, अंक : 24 | पाक्षिक | 16–30 नवम्बर, 2011

पंतनगर विश्वविद्यालय का 52वां स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया

दिनांक 17 नवम्बर, 2011 को विश्वविद्यालय का 52वां स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। मुख्य कार्यक्रम रतन सिंह सभागार में आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व महानिदेशक तथा वर्तमान में बिहार के मुख्यमंत्री के कृषि सलाहकार, डा. मंगला राय थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने की। कार्यक्रम में भूतपूर्व कुलपति डा. आनंद स्वरूप, व भूतपूर्व अधिष्ठाता, वैज्ञानिक व विद्यार्थी; प्रोफेसर गजेंद्र सिंह, प्रोफेसर बच्चन सिंह, डा. बी.पी.एन. सिंह, डा. एच.एस. चौहान, डा. आर.सी. पंत, डा. वाई.एल. नैने, श्री समर पाल सिंह; विश्वविद्यालय की प्रबंध परिषद के सदस्य डा. आर.एल. अरोरा, श्री राजेश शुक्ला, श्री के.एस. पंवार; उद्योग जगत के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान, नीति निर्धारक, सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, वैज्ञानिक, विद्यार्थी, कर्मचारी तथा किसान उपस्थित थे। इस अवसर पर डा. मंगला राय ने अपने 'सदाबहार क्रांति की आवश्यकता–पंतनगर की भूमिका' विषयक अभिभाषण में कहा कि कृषि आधारित उद्योग की स्थापना कृषि विकास का मंत्र है तथा उद्योगों को कृषि उत्पाद की आपूर्ति को बनाये रखने में आ रही बाधाओं को समाप्त करने की ओर अधिक ध्यान देना होगा जिसमें शीघ्र खराब होने वाले कृषि उत्पादों को उद्योग तक समय रहते पहुंचाने की व्यवस्था करनी होगी। उन्होंने प्रथम हरित क्रांति के दुष्प्रभाव जैसे पार्थेनियम घास का विदेशी गेहूं के बीज के साथ आना, रासायनिक उर्वरकों में से नाइट्रोजन का अंधाधुंध प्रयोग तथा पानी के बेतहाशा प्रयोग से जल स्तर का नीचे होते जाना, से भविष्य की क्रांति के लिए सबक लेने हेतु चेताया। अपने आंकड़ों से समृद्ध सार–गर्भित व्याख्यान में डा. राय ने फसलों में संसाधनों को ग्रहण करने की क्षमता बढ़ाने तथा संरक्षित खेती से उनके कम से कम प्रयोग से अधिकतम परिणाम प्राप्त करने की सलाह दी। साथ ही सूचना एवं संचार तकनीक, कम्प्यूटर, उपग्रह जनित डेटा इत्यादि को समन्वित कर भावी योजनाओं को तैयार करने के लिए भी कहा। उन्होंने विश्वविद्यालय में विभिन्न महाविद्यालयों एवं विभागों के समन्वित शोध एवं शिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ करने तथा बायोतकनीक के प्रयोग से एक फसल के पौधों से विशिष्ट गुणों को दूसरी फसल के पौधों में प्रयोग कर उत्कृष्ट प्रजातियां विकसित करने की भी बात कही। विश्वविद्यालय को उन्होंने कुछ चयनित क्षेत्रों में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विशिष्टता विकसित करने की भी सलाह दी। डा. राय ने जलवायु परिवर्तन, दक्षता विकास, मशीन एवं यंत्रों का प्रयोग, सूक्ष्म जीवियों की उपयोगिता, कृषि निर्यात, इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी अपने विचार रखे।

डा. बी.एस. बिष्ट देवांग मेहता बिजनेस स्कूल एवार्ड से सम्मानित

विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान एवं नेतृत्व के लिए **'ऐकेडमिक एक्सीलेंस अवार्ड 2011'** से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड उन्हें 19वें देवांग मेहता बिजनेस स्कूल अवार्ड समारोह में **26 नवम्बर, 2011** को ताज लैड्स एण्ड होटल, मुम्बई में हिन्दुस्तान यूनीलीवर लिमिटेड तथा केनन हैक्सावेयर टैक्नोलॉजीस द्वारा प्रदान किया गया। इस समारोह में देश के प्रौद्योगिकी एवं प्रबन्धन संस्थानों के शीर्ष पदाधिकारी उपस्थित थे। डा. बिष्ट को इससे पूर्व भी इस वर्ष के

प्रारम्भ में ऐमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा द्वारा नेतृत्व एवं शिक्षा, शोध एवं प्रसार में बहु–संकाय उत्कृष्टता के लिए अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। डा. बिष्ट ने इस अवार्ड का श्रेय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, कर्मचारियों तथा विश्वविद्यालय से जुडे किसानों को दिया है। विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने कुलपति को यह अवार्ड मिलने पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए बधाई दी।

कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने अपने प्रस्तुतीकरण में विश्वविद्यालय की स्थापना से वर्तमान तक के क्रिया–कलापों तथा विभिन्न इकाइयों की उपलब्धियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि अब हरित क्रांति की जगह समगतिशील कृषि क्रांति को अपनाने का समय आ गया है। अब खाद्य उत्पादन प्रणाली को एक नए प्रोत्साहन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि पंतनगर विश्वविद्यालय भारतीय हरित क्रांति की जन्मस्थली रहा है, इस लिहाज से इसे नई क्रांति को लाने में भी अहम भूमिका निभानी होगी। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड, जिसमें कि 70 प्रतिशत पहाड़ी कृषि है, के अलावा अन्य पहाड़ी प्रदेशों की पंतनगर विश्वविद्यालय से बड़ी उम्मीदें हैं और हमें उनकी आशाओं पर भी खरा उतरना है। इस अवसर पर पूर्व विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के छात्र रहे डा. आर.एन. त्रिखा ने अपने अनुभव बांटे और नीति–निर्माताओं, वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे किसानों के खेतों को खेती की सफल प्रयोगशाला बनाने में अपना योगदान दें। वर्ष 1967 के बैच के छात्र रहे इंजीनियर तथा प्रगतिशील कृषक, अरूण कुमार भक्कू ने किसानों के प्रतिनिधि के तौर पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि पंतनगर विश्वविद्यालय की सहायता से हम पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न उत्पन्न कर हरित क्रांति लाने में सफल हुए और सदाबहार हरित क्रांति लाने के लिए हमें समूचे कृषि क्षेत्र का विकास करना होगा। वहीं कृषि उद्योग का प्रतिनिधित्व कर रहे के.एल.ए. फूड लि. के श्री अशोक अग्रवाल का कहना था कि उद्योग जगत तो नवजात शिशु की तरह होता है जिसे देखभाल और मार्गदर्शन की जरूरत होती है, ठीक उसी प्रकार कृषि उद्योग को भी विश्वविद्यालय के ज्ञान व अनुभव की आवश्यकता है। इस अवसर पर डा. मंगला राय को कुलपति डा. बिष्ट द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने विश्वविद्यालय की एक पुस्तिका 'पंतनगर लीडरशिप फार एवर ग्रीन रेवोल्यूशन' तथा गृह विज्ञान महाविद्यालय के एक प्रकाशन का भी विमोचन किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार ने सभी का स्वागत किया तथा अंत में निदेशक, शोध, डा. जे.पी पांडे ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सायंकाल गांधी हाल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। स्थापना दिवस समारोह का समापन दिनांक 18 नवम्बर, 2011 को सम्पन्न हुआ। समारोह में नये पाठ्यक्रम तथा शोध एवं प्रसार कार्यक्रम प्रारम्भ किये जाने, विश्वविद्यालय द्वारा पर्वतीय क्षेत्रों की कृषि के लिए किये गये कार्यों तथा उसके लम्बे अनुभव एवं संसाधनों को देखते हुए हिमालयी क्षेत्र के सभी पर्वतीय राज्यों के लिए पंतनगर की अगुवाई में कन्सोर्शियन के आधार पर शोध एवं प्रसार कार्यक्रम चलाये जाने, जल, ऊर्जा एवं श्रम के कम से कम प्रयोग से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने हेतु संरक्षण तकनीकों पर अधिक बल देने तथा कृषि उत्पादों की बिक्री, परिवहन, संसाधन इत्यादि की समस्याओं की ओर भी और अधिक ध्यान दिये जाने की संस्तुति की गयी। इस अवसर पर की गई संस्तुतियों को विभिन्न विषय के विशेषज्ञों द्वारा पुनः विचार–विमर्श कर विश्वविद्यालय में अपनाये जाने हेतु विशिष्ट निर्देश तैयार किये जायेंगे जिनके आधार पर विश्वविद्यालय के भावी कार्यक्रमों का निर्धारण किया जायेगा।

'टिकाऊ मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादन एवं खाद्य सुरक्षा हेतु संतुलित उर्वरक' वि ायक संगो ठी आयोजित

दिनांक 25–26 नवम्बर, 2011 को मृदा विज्ञान विभाग में अन्तर्रा ट्रीय पोटाश संस्थान एवं भारतीय कृ ि रसायनविद् समिति के तत्वावधान में भारतीय कृ ि रसायनविद् समिति का 'टिकाऊ मृदा स्वास्थ्य, फसल उत्पादन एवं खाद्य सुरक्षा हेतु संतुलित उर्वरक' वि ाय पर दो दिवसीय संगो ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बि ट संगो ठी में मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। संगो ठी को सम्बोधित करते हुए कुलपति डा. बि ट ने कहा कि नाइट्रोजन उर्वरकों का उपयोग अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में किया जा रहा है

जो कि इनकी बाजार में कम उपलब्धता के कारण हुआ है। उन्होंने कहा कि फास्फोरस व पोटाश के ज्यादा इस्तेमाल से भूमि में पोटाश तत्वों का असंतुलन हो गया है। जहाँ 1970 में एक किग्रा उर्वरक से 13 कि.ग्रा. अन्न पैदा होता था वहीं आज केवल 3.2 कि.ग्रा. ही हो रहा है। डा. बि ट ने कहा कि रसायनों के दु प्रभाव से पानी में नाइट्रेट अधिक मात्रा में हो गये है जिससे भूमि में सूक्ष्म पो क तत्वों की कमी आ गयी है तथा उत्पादन में अस्थिरता हो गयी है। इसके लिए हमें इन उर्वरकों की मात्रा को कम करना होगा जिससे भवि य में प्रचुर मात्रा में खाद्यान्न उत्पादन सम्भव हो सके। अपने अध्यक्षीय भा ण में अधि ठाता, कृ ि महाविद्यालय डा. जे कुमार ने कृ ि भूमि के लगातार कम होने पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि भूमि की उर्वरा क्ति का भी ह्रास हुआ है। संगो ठी को रसायनविद् समिति के अध्यक्ष डा. पी.के. बनर्जी, सचिव डा. ए.के. सिंह, भारतीय पोटाश अनुसंधान संस्थान, गुड़गांव के निदेशक डा. एस.के. बंसल व डा. एस.के.डे ने भी संबोधित किया। इस दौरान रसायनविद् समिति के सचिव डा. ए.के. सिंह ने समिति की वार्ि क रिपोर्ट प्रस्तुत की। आयोजन समिति के संयोजक डा. राजेश चन्द्रा ने संगो ठी का संक्षिप्त प्रतिवेदन व स्वागत भा ण प्रस्तुत किया। संगो ठी के सह संयोजक डा. के.पी. रावेरकर ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर मृदा विज्ञान विभाग द्वारा तैयार की गयी स्मारिका का भी विमोचन किया गया।

घरेलू मुर्गी पालन पर प्रशिक्षण आयोजित

दिनांक 21–23 नवम्बर, 2011 तक प्रसार शिक्षा निदेशालय में स्थित राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा राज्य के कृषक सलाहकार समिति के सदस्यों हेतु **'घरेलू मुर्गी पालन'** विषय पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर निदेशक प्रसार शिक्षा व समेटी–उत्तराखण्ड, डा. वाई.पी.एस. डबास ने कहा कि भारत की 58 प्रतिशत जनता कृषि पर आधारित है लेकिन कभी–कभी मौसम के बदलाव ने कारण कृषि से होने वाले लाभों से किसान वंचित रह जाते हैं एवं उन्हें नुकसान उठाना पड़ता है। ऐसे में वैकल्पिक साधन के रूप में मुर्गी पालन को एक छोटे व्यवसाय की तरह घर में ही अपनाया जा सकता है। इस व्यवसाय से आय बहुत ही कम समय में शुरू हो जाती है, क्योंकि मांस देने वाले मुर्गे दो महीने में ही मांस हेतु तैयार हो जाते हैं व अण्डा देने वाली मुर्गी छः महीने में ही अण्डा देना शुरू कर देती है। अण्डे से प्राप्त प्रोटीन पूरे परिवार के लिए 2–3 रूपये में ही उपलब्ध कराया जा सकता है जो कि अन्य प्रोटीन के स्रोत जैसे दालें, मांस आदि से अपेक्षाकृत बहुत ही सस्ता है। इस प्रकार ग्रामीण इस व्यवसाय से अपने घर की जरूरतों को पूरा करने के साथ–साथ आमदनी भी कर सकते हैं। मुर्गी की खाद खेती के लिए बहुत ही उपयोगी है। 40 मुर्गियों से साल भर में 1 टन खाद एक एकड़ जमीन के लिए तैयार की जा सकती है। इसकी खाद डालने के बाद खेतों में रासायनिक खाद डालने की जरूरत नहीं होती क्योंकि इसकी खाद में गोबर की खाद से ज्यादा उर्वरता होती है व जमीन का पी.एच. मान भी संतुलित रहता है। इस कार्यक्रम के आयोजन में डा. राम जी मौर्य, विषय वस्तु विशेषज्ञ; डा. बी.वी. सिंह, कनिष्ठ वैज्ञानिक; डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फैलो एवं डा. भावना गोयल, वरिष्ठ शोध अध्येता की प्रमुख भूमिका रही। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रदेश के कई जनपदों से आये कृषक सलाहकार समिति के सदस्य व तकनीकी कर्मचारियों ने प्रतिभाग किया।

डा. सुब्रमन्यम स्वामी द्वारा व्याख्यान एवं विश्वविद्यालय फार्म का भ्रमण

दिनांक 26 नवम्बर, 2011 को प्रख्यात राजनेता डा. सुब्रमन्यम स्वामी ने विश्वविद्यालय में 'भ्रष्टाचार लोकतंत्र' के लिए खतरा' विषय पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया। इसके बाद डा. सुब्बरामन्यम स्वामी, कैमिकल इंजीनियर डा.एम.डी. दीवान, इंचार्ज, अरून्धती फाउन्डेशन डा. चन्द्र प्रकाश तथा सामाजिक कार्यकर्ता श्री आर.एस. पंकज ने विश्वविद्यालय फार्म का भ्रमण किया। मुख्य महाप्रबन्धक फार्म डा. ए.के. भारद्वाज ने विश्वविद्यालय फार्म के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा अतिथियों को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय फार्म देश का प्रथम आई.एस.ओ.सर्टिफाइड बीज उत्पादन केन्द्र है, जो माडल फार्म के रूप में कार्य कर रहा है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय फार्म की उत्पादकता आज बहुत उच्च कोटि की है, जो कि धान की लगभग 60 कु./है., गेहूँ की 50 से 52 कुं./है, गन्ने की लगभग 600 कुं./है तथा मसूर, लाही एवं सोयावीन की 19 से 20 कुं./है. है। यह उत्पादकता प्रदेश के उच्च उत्पादकता वाले जनपद ऊधम सिंह नगर एवं पंजाब की औसत उत्पादकता से उच्च है। डा. स्वामी ने विश्वविद्यालय फार्म की उत्पादकता को देश की उत्पादकता की तुलना में जानना चाहा तथा बताया कि विश्वविद्यालय फार्म की उत्पादकता को देश के उत्पादकता के सापेक्ष तुलना करना उचित नही होगा क्योंकि देश में विभिन्न जलवायु एवं परिस्थितियों में उत्पादन किया जाता है। उन्होंने यह भी जानना चाहा कि एक हैक्टेयर क्षेत्रफल से समस्त इनपुटों के सापेक्ष फार्म की कितनी उत्पादकता है। इस पर मुख्य महाप्रबन्धक फार्म ने बताया कि विश्वविद्यालय फार्म पर लगभग 400 कृषि श्रमिक कार्यरत हैं, जो

कि नियमित हैं तथा जिनकी औसत उम्र 58 वर्ष के लगभग है। इनके वेतन आदि का खर्चा लगभग 14 करोड़ वार्षिक है। विश्वविद्यालय फार्म बीज उत्पादन हेतु फसलों की उर्वरक संस्तुतियों के आधार पर उर्वरक प्रयोग करता है तथा मृदा स्वास्थ्य बनाये रखने के उददेश्य से इसमें हरी खाद का प्रयोग किया जाता है। डा. स्वामी के साथ डा. दीवान एवं डा. चन्द्र प्रकाश, श्री आर.एस. पंकज ने विश्वविद्यालय फार्म पर जीरो टिलेज गेहूँ के अर्न्तगत ड्रिप सिचाई की फसल का अवलोकन किया तथा यह जानना चाहा कि फार्म कितने क्षेत्रफल पर इसराइल द्वारा विकसित जल संरक्षण तकनीकियों का प्रयोग करता है। डा. भारद्वाज ने अवगत कराया कि विश्वविद्यालय फार्म साधन संरक्षण तकनीकियाँ जैसे– धान में सीधी बुवाई व गेहूँ में जीरो टिलेज बुवाई का प्रयोग लगातार कर रहा है एवं इस वर्ष से कुलपति डा. बिष्ट के निर्देशानुसार एक एकड़ क्षेत्रफल पर धान की सीधी बुवाई में ड्रिप इर्रीगेशन सिस्टम स्थापित किया जिसकी की उत्पादकता 8 टन प्रति है. प्राप्त हुई। इससे उत्साहित होकर उन्होंने मुख्य महाप्रबन्धक फार्म को उपरोक्त टपक सिचाई गेहूँ, गन्न एवं मटर में भी प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया। मुख्य महाप्रबन्धक फार्म ने अतिथियों को बताया कि विश्वविद्यालय फार्म अपने सीमित संसाधनों से उच्चतम तकनीकियों को लगातार प्रयोग कर रहा है, जो कि उत्पादकता में वृद्धि में सहायक हो रही है।

गृह विज्ञान महाविद्यालय में ''संकलन–2011'' प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांक 25–26 नवम्बर, 2011 को गृह विज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग द्वारा रंगाई एवं छपाई विषय के अन्तर्गत प्रदर्शनी **'संकलन–2011'** का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट द्वारा किया गया। उद्घाटन के समय मौजूद मुख्य लोगों में महाविद्यालय की अधिष्ठाता डा. रीता सिंह रघुवंशी, ओ.बी.टी. टैक्सटाइल के असिस्टेन्ट जनरल मैनेजर श्री ए.के. पाण्डे वं फैक्ट्री मैनेजर श्री के.के. त्रिपाठी, विभाग की प्रमुख डा. शहनांज जहां, विषय निदेशक डा. मनीषा गहलौत एवं ज्योति सिंह मलिक थे। इसमें छात्र–छात्राओं की रचनात्मकता को उभारने के लिए विभिन्न हस्तनिर्मित उत्पाद प्रदर्शित किये गये जो मुख्यतः बांधनी, स्क्रीन व ब्लॉक छपाई एवं बाटिक की तकनीक द्वारा बनाए गये थे। प्रदर्शित वस्तुओं में कुर्तियां, टी–शर्ट, वॉल–पैनल, स्कर्ट आदि थे। उत्तराखण्ड की परम्परागत अल्पना, ऐंपन के नमूनों को छपाई द्वारा आकर्षक तरीके से वस्त्रों पर प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में प्रदर्शित उत्पादों की लोगों ने भरपूर सराहना की और विद्यार्थियों को उनके सराहनीय कार्य के लिए प्रोत्साहित किया।

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा पुस्तक मेले का आयोजन

दिनांक 29–30 नवम्बर, 2011 को विश्वविद्यालय के संचार निदेशालय के सामुदायिक रेडियो केन्द्र भवन में एक पुस्तक मेले का आयोजन किया गया जिसका कुलसचिव, डा. जे. कुमार ने फीता काटकर उद्घाटन किया। इस मेले का आयोजन विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा किया गया। डा. जे. कुमार ने उद्घाटन के बाद मेले में आयी विभिन्न भारतीय एवं विदेशी प्रकाशकों की पुस्तकों का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि इस मेले के माध्यम से शिक्षकों को अपनी रूचि व विषय के अनुसार उचित पुस्तक चयन करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। साथ ही विद्यार्थियों एवं बच्चों को अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तक क्रय करने का अवसर मिला है। डा. कुमार ने बताया कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा रेन्टल बुक योजना के अंतर्गत विद्यार्थियों को समुचित पुस्तकें उपलब्ध कराने में भी यह मेला सहायक होगा। पुस्तकालयाध्यक्ष, डा. एस.पी. जैन ने बताया कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय को पुस्तकों के क्रय हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से 175 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ है जिसमें से 30 प्रतिशत राशि का पुस्तकों को ऑन–लाईन रूप में लेने हेतु प्रयोग किया जायेगा। इस मेले के आयोजन से पुस्तकालय में नयी किताबों को क्रय करने में आसानी होगी। डा. जैन ने यह भी बताया कि इस मेले में पहली बार मेले में आये सभी स्टालों द्वारा लगायी गई पुस्तकों का एक केन्द्रीय डेटाबेस कम्प्यूटर में संग्रहित किया गया है जिससे कोई भी क्रेता अपनी पसंद की किताब की उपलब्धता की जानकारी कम्प्यूटर पर ही प्राप्त कर सकता है जिससे उसे क्रयादेश देने में आसानी होगी। इस सुविधा से पुस्तकालय को भी शिक्षकों द्वारा दी गई पुस्तकों की लिस्ट तैयार करने में तथा क्रयादेश की कुल राशि का अनुमान लगाने में सहायता मिलेगी। उन्होंने इस प्रयोग को दूसरे पुस्तक मेलों के लिए भी एक उदाहरण के रूप में बताया।

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट ने भी दूसरे दिन मेले का भ्रमण किया तथा इसे अत्यन्त लाभप्रद बताते हुए शिक्षकों एवं विद्यार्थियों से मेले का पूरा फायदा उठाने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि पुस्तकें

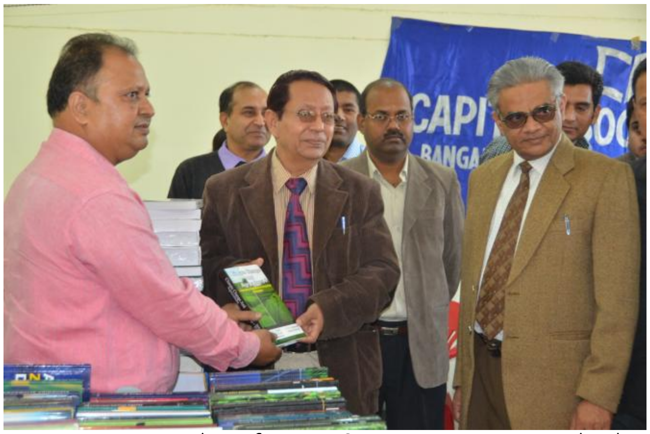

मनुष्य की सबसे अच्छी दोस्त होती है और उचित ज्ञान का प्रसार करती हैं। डा. बिष्ट ने यह कहा कि इंटरनेट के इस युग में पुस्तकें इलेक्ट्रानिक रूप में भी प्रकाशित होने लगे हैं जिनको कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से मिले 175 लाख रू. के अनुदान में से 30 प्रतिशत राशि ऐसी पुस्तकों के ऑल–लाईन रूप के लिए प्रयुक्त की जायेगी। इस अवसर पर कुलपति डा. बिष्ट ने इस मेले में आयी पंतनगर के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'क्लाइमेट चेन्ज एण्ड एग्रीकल्चर' का लोकार्पण भी किया। इस पुस्तक के लेखक स्वयं डा. बिष्ट के अतिरिक्त डा. वीर सिंह, डा. उमा मलकानिया, डा. आर.के. श्रीवास्तव एवं नन्दा नौटियाल हैं। इस पुस्तक को दिल्ली स्थित बॉयोटेक ने प्रकाशित किया है। इस पुस्तक मेले में वर्ष 2010 एवं 2011 की पुस्तकें उपलब्ध करायी गयी। भारत में कुल 16000 प्रकाशक हैं जो प्रति वर्ष 1 लाख नई पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। विश्व में भारत ही एक मात्र देश है जहां सबसे अधिक, 24 भाषाओं में, पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इसी से भारतीय पुस्तक उद्योग के बारे में अन्दाजा लगाया जा सकता है। इस मेले में कृषि के साथ–साथ पशुचिकित्सा, जैव तकनीक, सूक्ष्म जीव विज्ञान, पर्यावरण, वानिकी, प्रबन्धन, प्रौद्योगिकी, मत्स्य विज्ञान, समाज शास्त्र, जन संचार इत्यादि अनेक विषयों की पुस्तकों को 25 प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं, पुस्तक एजेंसियों द्वारा प्रदर्शित किया गया जिनमें ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, टाटा मेक्ग्रा हिल एजुकेशन प्रा.लि., कल्याणी पब्लिशर, नीलकमल प्रकाशन, कैपिटल बुक प्रा.लि., एशियन बुक प्रा.लि., इंटरनेशल बुक हाउस, न्यू एज इंटरनेशल प्रा.लि., पी.एच.आई. लर्निंग प्रा.लि. इत्यादि सम्मिलित हैं।

ऊन रंगाई एवं कालीन डिज़ाइन पर प्रशिक्षण आयोजित

दिनांक 28 नवम्बर 2011 से विश्वविद्यालय के गृहविज्ञान महाविद्यालय के वस्त्र एवं परिधान विभाग में अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना के अंतर्गत सेन्ट्रल हिमालयन इन्वायरमेन्ट एसोसिएशन (चिया), नैनीताल के सहयोग से पिथौरागढ़ के मुन्श्यारी क्षेत्र के कालीन बुनकरों के लिए 'ऊन रंगाई एवं कारपेट डिजाइन' पर चार–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित करते हुए कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इनमें प्रतिभागी अपनी समस्याओं का भी निवारण कर सकते हैं। साथ ही विश्वविद्यालय में उपलब्ध अन्य सेवाओं का लाभ भी उठा सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों ने काफी उत्साह दर्शाया और अपने अनुभवों को बताते हुए भविष्य में होने वाले प्रशिक्षणों में भाग लेने की इच्छा जताई। प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन डा. रीता सिंह रघुवंशी, अधिष्ठात्री, गृहविज्ञान महाविद्यालय द्वारा किया गया। वस्त्र एवं परिधान विभाग की विभागाध्यक्ष, डा. शहनांज जहां; परियोजना संचालिका, डा. मनीषा गहलोत; सह प्राध्यापिका, डा. अनीता रानी; फील्ड टास्क मैनेजर, श्री नवीन जोशी व विभाग के अन्य सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे। परियोजना की संचालिका डा. मनीषा गहलौत एवं वरिष्ठ शोध अध्येता, कु. अमृता सिहं व कु. अनुराधा आर्या ने प्रतिभागियों को ऊन पर उनके आस–पास उपलब्ध प्राकृतिक स्रोतों जैसे डोलू की जड़, गैंदें के फूल, प्याज के छिलके इत्यादि से निकाले गये रंगों से रंगााई पर ज्ञान व प्रशिक्षण प्रदान किया। प्रशिक्षुकों को प्राकृतिक रंगों के साथ विभिन्न रसायनों व मारडेन्ट का उपयोग करके अलग–अलग रंगों को बनाना भी सिखाया गया। स्नातकोत्तर की छात्राओं कु. स्वाति पंत और कु. अनुप्रिया सिंह ने प्रतिभागियों को एसिड रंगों से रंगाई का प्रशिक्षण दिया। अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना टीम ने प्रतिभागियों को कालीन व गलीचों के नये व आधुनिक डिजाइन और रंगों के संयोजन पर ज्ञान दिया। साथ ही विभिन्न कालीन व गलीचे बनाने की तकनीकों से भी अवगत कराया। डा. अनीता रानी और स्नातकोत्तर छात्रा, कु. मोनिका नेगी के द्वारा प्रतिभागियों को विभिन्न सरकारी योजनाओं और बिक्री के स्रोतों के बारे में जानकारी दी गयी जिससे वे अपनी आय में वृद्वि कर सकें।

अधिष्ठात्री, गृह विज्ञान डा. रीता सिंह रघुवंशी सम्मानित

गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठात्री, डा. रीता सिंह रघुवंशी को वर्ष 2011 के डा. राजामल्ल पी. देवदास स्मृति अवार्ड से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड उन्हें न्यूट्रिशन सोसाईटी ऑफ इंडिया के हैदराबाद में आयोजित 43वें राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया। इस अवार्ड की स्थापना न्यूट्रिशन सोसाईटी ऑफ इंडिया ने अविनाशीलिंगम शिक्षण ट्रस्ट एवं अविनाशीलिंगम महिला विश्वविद्यालय के सहयोग से वर्ष 2009 में की थी। यह अवार्ड भारतीय मूल की ऐसी महिला पोषण वैज्ञानिक को दिया जाता है जिसने भारत में व्यवहारिक पोषण विज्ञान पर उत्कृष्ट कार्य किया हो। डा. रघुवंशी यह अवार्ड प्राप्त करने वाली दूसरी महिला वैज्ञानिक है। डा. रघुवंशी ने इस अवसर पर डा. राजामल्ल पी. देवदास स्मृति व्याख्यान भी दिया जिसका विषय था 'बेहतर कल के लिए पोषण का पुनर्गठन'। डा. रघुवंशी एक कुशल शिक्षाविद्, शोधकर्ता एवं प्रबन्धक हैं तथा पिछले 25 वर्ष से भी अधिक समय से पोषण के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। वर्तमान में वे विभिन्न शोध एवं प्रसार कार्यक्रमों के द्वारा लोगों में पोषण जागरूकता के प्रसार से जुड़ी हैं। एक शोध वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर कई शोध परियोजनाओं का संचालन किया है। एक उत्कृष्ट शिक्षाविद् के रूप में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर पोषण कार्यक्रमों के नीति निर्माण में भी उनकी भागीदारी रही है।

कृि ा महाविद्यालय के पाँच विद्यार्थी पुरस्कृत

पिछले दिनों मुम्बई में हुए एक कार्यक्रम के दौरान कृषि महाविद्यालय के पँाच मेधावी विधार्थियों को बायर्स क्राप सांइस के मुख्यालय में छात्रवृत्ति एवं नकद पुरस्कारों से नवाजा गया। पुरस्कृत विद्यार्थियों में कृषि स्नातक बी.एस.सी. एजी. (अंतिम वर्ष) की छात्रा कु. गोल्डी तिवारी एवं कृषि स्नातक बी.एस.सी. एजी. (तृतीय वर्ष) की मामिनी पांडे, योगिता बोरा, करन प्रकाश एवं सूरज कुमार थे। उक्त विद्यार्थियों को मुम्बई में आयोजित एक कार्यक्रम में पुरस्कृत करने हेतु अधिष्ठाता कृषि डा. जे. कुमार एवं स्टाफ काउंसलर डा. डी.सी. बसखेती के साथ मुम्बई बुलाया गया एवं प्रत्येक विद्यार्थियों को पच्चीस हजार रूपये छात्रवृति के रूप मे दिए गये। उल्लेखनीय है कि उक्त विद्यार्थियों का चयन अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित चयन प्रक्रिया, जिसमें देश के छः नामी संस्थानों के लगभग 350 छात्रों के बीच में से किया गया एवं कुल 21 छात्रों को पुरस्कृत किया गया। विद्यार्थियों की उक्त सफलता के लिए कुलपति डा. बी.एस.बिष्ट द्वारा छात्रों को बधाई दी गई। अधिष्ठाता कृषि डा. जे कुमार ने भी विद्यार्थियों की उक्त सफलता के लिए प्रशंसा की व इसी तरह भविष्य में भी विश्वविद्यालय का नाम रोशन करने की आशा व्यक्त की। स्टाफ कांउसलर डा. डी.सी. बसखेती ने भी उक्त छात्रों के सुनहरे भविष्य की कामना की है।

सब्जी विज्ञान विभाग के सह–प्राध्यापक डा. डी.के. सिंह साइंटिस्ट ऑफ द इयर अवार्ड से सम्मानित

डा. दिनेश कुमार सिंह, सह–प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान विभाग को बायोलोजिकल साइंस एवं रूरल डेवलपमेन्ट सोसाइटी इलाहाबाद ने साइंटिस्ट ऑफ दी इयर अवार्ड से सम्मानित किया है। यह सम्मान उन्हें सब्जी अनुसंधान तथा तकनीकों को किसानों के प्रक्षेत्र तक प्रसारित किये जाने के उनके कार्य को देखते हुए दिया गया। यह संस्था कृषि अनुसंधान एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए अग्रणी वैज्ञानिकों को पुरस्कृत करती है। संस्था द्वारा यह पुरस्कार अपनी द्विवर्षीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में दि. 11–12 नवम्बर, 2011 को प्रशस्ति–पत्र के साथ दिया गया। इससे पहले डा. सिंह को उनकी पुस्तक के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, द्वारा डा. राजेन्द्र प्रसाद पुरस्कार के अतिरिक्त डा. एस.एल. साह मेमोरियल साइंटिस्ट अवार्ड, अंतर्राष्ट्रीय फ्रेन्डशिप सोसाइटी द्वारा स्वर्ण पदक तथा चीन में उत्कृष्ट शोध व्याख्यान हेतु अति विशिष्ट पुरस्कार से पुरस्कृत किया जा चुका है।

आणविक जीव विज्ञान एवं आनुवंशिक अभियांत्रिकी विभाग की छात्राओं को युवा वैज्ञानिक का पुरस्कार

विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के आणविक जीव विज्ञान एवं आनुवंशिक अभियांत्रिकी विभाग में अध्ययनरत शोध छात्राओं साधना सिंह, ममता मेटवाल एवं ऋचा झा को अल्मोड़ा में दिनांक 14.11.2011 से 16.11.2011 तक सम्पन्न **छठीं उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कांग्रेस** में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साधना सिंह एवं ममता मेटवाल आणविक जीव विज्ञान एवं आनुवंशिक अभियांत्रिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनिल कुमार के दिशा–निर्देशन में अपना शोधकार्य सम्पन्न कर रही है एवं ऋचा झा वैटैनरी विभाग के डा. ममतेश कुमार सक्सेना के निर्देशन में शोधरत है। साधना सिंह को यह पुरस्कार गेहूँ में होने वाले करनाल बण्ट रोग पर आधरित सेंसर पर रिसर्च करने के लिए दिया गया। ममता मेटवाल का शोध विषय ''कार्बन नैनोकणों पर आधरित इम्यूनायग्नोस्टिक यन्त्र जो गेहूं के करनाल बण्ट रोग के परीक्षण के लिए उपयोगी है'' पर था। ऋचा झा का शोध 'सालमोनेलोसिस के खिलाफ सबयूनिट टीके के मूल्यांकन' पर आधारित था। साथ ही विभाग में कार्यरत डा. पुष्पा लोहनी, सहायक प्राध्यापिका को भी श्रेणी–2 में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार से नवाज़ा गया। इनका शोध विषय 'मडुंवा (रागी) से सूखा प्रतिरोधक ट्रांसकिप्शन कारक के विगलन' पर था। डा. लोहनी अजैविक तनाव पर डा. संदीप अरोरा, सह–प्राध्यापक के साथ मिलकर शोध कर रही हैं।

dq| k/kuk fl g

dqeerk esVoky

dqfjpk >k

Mk- iqi"kk yksguh

विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के बी.टेक. (बायोटेक) चतुर्थ व र्ा के चार विद्यार्थियों का चयन

विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के बी.टेक (बायोटेक) चतुर्थ वर्ष के चार विद्यार्थियों आकृति तायल, चन्द्र प्रकाश जोशी, मेघा पुनेठा तथा स्नेहा त्रिपाठी का मैसर्स टाटा कन्सल्टेन्सी सर्विसेज (टी.सी.एस.) लिमिटेड, नई दिल्ली में चयन हो गया है। इन सभी विद्यार्थियों को महाविद्यालय एवं विभाग के प्राध्यापकों द्वारा बधाई दी गयी।

प्रशिक्षण एवं सेवायोजन

- दिनांक 17–18 अक्टूबर, 2011 को आयोजित साक्षात्कार में यूनियन बैंक आफ इंडिया द्वारा 18 स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों का चयन किया गया।
- मै. स्केनिक डवलपर्स प्रा. लि. दिल्ली द्वारा बी.एस.सी.(हार्टिकल्चर), एम.एस.सी.एजी. (हार्टिकल्चर) छात्रों से, मै. हिन्द ग्रुप आफ कम्पनीज, नई दिल्ली द्वारा बी.वी.एस.सी एण्ड ए.एच. छात्रों से, मै. आर.के.सीड फार्म्स, आजादपुर दिल्ली द्वारा पी.एचडी. छात्रों से तथा मै. साहा फार्म्स द्वारा बी.एस.सी.फूड टेक्नालाजी, एम.एस.सी. फूड टेक्नोलाजी, एम.टेक. प्रोसेस इंजीनियरिंग छात्रों से बायोडाटा आमंत्रित किये गये हैं।
- मै. वाप्कोस लि., गुड़गांव द्वारा बी.एस.सी. फूड टेक्नोलाजी छात्रों से प्राप्त 17 बायोडाटा प्रे ित किये गये।
- मै. पेप्सिको, बाजपुर द्वारा बी.एस.सी. फूड टेक्नोलाजी के 7 छात्रों का दिनांक 28.11.2011 को साक्षात्कार लिया गया।

विश्वविद्यालय से 16 कार्मिक सेवानिवृत्त

दिनांक 30 नवम्बर, 2011 को विश्वविद्यालय से 16 कार्मिक सेवानिवृत्त हुए जिनको प्रशासन भवन स्थित सभागार में आयोजित विदाई समारोह में भावभीनी विदाई दी गयी। विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट ने सभी सेवानिवृत्त हो रहे कर्मियों को फूलमाला पहनायी तथा उनके पेंशन व ग्रेच्युटी प्रपत्र एवं सामान्य भविष्य निधि की राशि के चेक प्रदान किये। कार्यवाहक वित्त नियंत्रक, श्री जे.सी बडोला ने सभी का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन किया। डा. बिष्ट ने इस अवसर पर कहा कि विश्वविद्यालय के 52वें स्थापना दिवस के अवसर पर आये अतिथियों ने विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षण,

शोध एवं प्रसार कार्यों की सराहना करते हुए इनको अत्यंत उपयुक्त बताया तथा इन्हें आगे भी चलाते रहने का सुझाव दिया। डा. बिष्ट ने कहा कि अब युवा कर्मियों को अपनी भूमिका निश्चित करते हुए लग्न से कार्य करना होगा। उन्होंने सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों को विश्वविद्यालय में उनके द्वारा किये गये योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि वे आने वाली पीढ़ी को अनुशासन में रहकर शान्तिपूर्ण तरीके से विश्वविद्यालय की प्रगति के लिए कार्य करते रहने के लिए प्रेरित करें ताकि विश्व प्रसिद्ध पंतनगर विश्वविद्यालय देश की कृषि के विकास में और अधिक योगदान दे सके। कुलपति ने सेवानिवृत्त हो रहे सभी कार्मिकों के लिए सुखमय भविष्य एवं दीर्घायु की शुभकामना की। इस अवसर पर सेवानिवृत्त हो रहे श्री उमेश चन्द्र पंत ने भी अपने विचार प्रकट किये। सेवानिवृत्त हो रहे कार्मिकों में श्री उमेश चन्द्र पंत, लेखाधिकारी; श्री अशोक कुमार रस्तोगी, प्रशासनिक अधिकारी द्वितीय; श्री राम केवल प्रसाद, एस.बी.ए.; श्री दीना एवं श्री कंवल देव, ट्रैक्टर चालक; श्री नारायन सिंह, पम्प चालक; श्री महादेव, श्री भुनेश्वर, श्री अफसर बेग, श्री जय किशन, श्री बंशी, श्री दयाराम, श्रीमती परनिंया, श्रीमती चरनबाई, श्रीमती मुनेजा एवं श्रीमती जसवा, कृषि श्रमिक सम्मिलित थे।

संरक्षक : डा. बी.एस. बिष्ट प्रबंध संपादक : डा. वीर सिंह संपादक : भीष्म सिंह संपादन सहयोग : दिनेश चन्द्र
कुलपति निदेशक संचार वैयक्तिक सहायक संचार केन्द्र